मूल्य रु. ५-०० सलंग अंक १६ अप्रैल-२०१५

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) ओकलेन्ड – न्युजीलेन्ड मंदिरनां पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।(२) टोरेन्टो केनेडा मंदिरमां रामनवमी उत्सव करते हुये हरिभक्त ।(३) एटलान्टा मंदिर में फूलदोलोत्सव ।(४) शिकागो मंदिर में गुजराती क्लास में गुजराती शिक्षण प्राप्त करते हुए बालक ।(५) जेतलपुर मंदिरमें श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा सभा में यजमान प.भ. जनकभाई विनुभाई पटेल परिवार प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुये ।(६) मूली मंदिरमें वसंत पंचमी के पाटोत्सव प्रसंग पर श्री राधाकृष्णदेव का महाभिषेक करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा रंगोत्सव में रंगखेलते हुये प.पू. महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ८ ● अंक : ९६
अप्रैल-२०१५

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अनुक्रमणिका

०१. अस्मदीयम् ०४
०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५
०३. मैं सदा आपके पास रहूँगा ०६
०४. नाम से पहचानते हैं, श्रीहरि के अपर स्वरुप के मुख से ०७
०५. कवि दलपतराम - सत्संग के सबसे बड़े कविरत्न ०८
०६. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १०
०७. सत्संग बालवाटिका १२
०८. भक्ति सुधा १४
०९. सत्संग समाचार १८

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

वसंतऋतु की विदाई होने के साथ ही गरमी का प्रकोप सभी को परेशान कर दिया है। एकाएक गर्मी के बढते ही सभी को गरमी का अनुभव होने लगा। यही भगवान की माया है। इसे कौन पार पा सकता है। विज्ञान की टेकनोलोजी इसमें काम नहीं आती। भगवान जैसा कोई नहीं हो सकता। आज के युग में बहुत सारे लोग स्वयं को भगवान समझने लगे हैं, स्वयं को भगवान कहवाते हैं। ये सभी नरक के अधिकारी हैं। उनके कल्याण का ठिकाना नहीं है, वे दूसरे का कल्याण क्या करेंगे ? फिर भी ऐसे लोग पुजाते हैं। उनकी प्रतिष्ठा है। कारण कि प्रजा भोली है। हम सभी के प्रारब्धभगवान बदल दिये हैं। वह इसलिये कि अपने गुरु रामानंद स्वामी से दो वचन हम सभी के लिये भगवान स्वामिनारायण मांगे थे। प्रथम यह कि हमारे सत्संगी को बीछी का दुःख हो तो वह हमें मिले जो मेरे आश्रित हों उन्हें कुछ भी नही हो। दूसरा यह कि हमारे आश्रित अन्न वस्त्र से दुःखी न रहें। ऐसे भगवान के हम आश्रित हैं।

सर्वोपरि इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने हम सभी के ऊपर खूब दया की है। उनकी आज्ञापालन करने का नियम रखेंगे तो जीवन में कहीं दुःख नहीं होगा। अपने प.पू. बड़े महाराजश्री कितनी बार सभा में आशीर्वाद देते हुये कहते हैं कि हम स्वयं अपने दुःख को बुलाते हैं, स्वयं दुःख तैयार करते हैं। इसलिये हमें भगवान की आज्ञा में रहन ।चाहिये। देव-आचार्य, मंदिर, संत-शास्त्र, इनसे ही अपना कल्याण है। श्रीजी महाराजने कहीं भी कुछ छोड़ा नहीं है। सब कुछ प्रदान किया है। इसलिये निश्चिंत होकर भगवान की भजन करलेनी चाहिये। ऐसा धर्म-धर्मकुल हमें मिला है, इन्ही की आज्ञा में अपना श्रेय है, कल्याण है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१४)

१ मुंबई में वाली (राज.) देश के हरिभक्तों के यहां सत्संग सभा तथा पदार्पण ।
२ श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडीया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
६ से ८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पदार्पण ।
८ श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
९ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पाटोत्सव प्रसंग पर आयोजित कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
१० से १७ श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर धनवाडा (धोलकादेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
२० श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२१ पालज गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
२३ वेडा गोविंदपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर भूमिपूजन प्रसंग पर पदार्पण ।
२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२८ श्रीहरि प्रागट्योत्सव के दिन अक्षर भुवन श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक अपने हाथो से संपन्न किये ।
२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

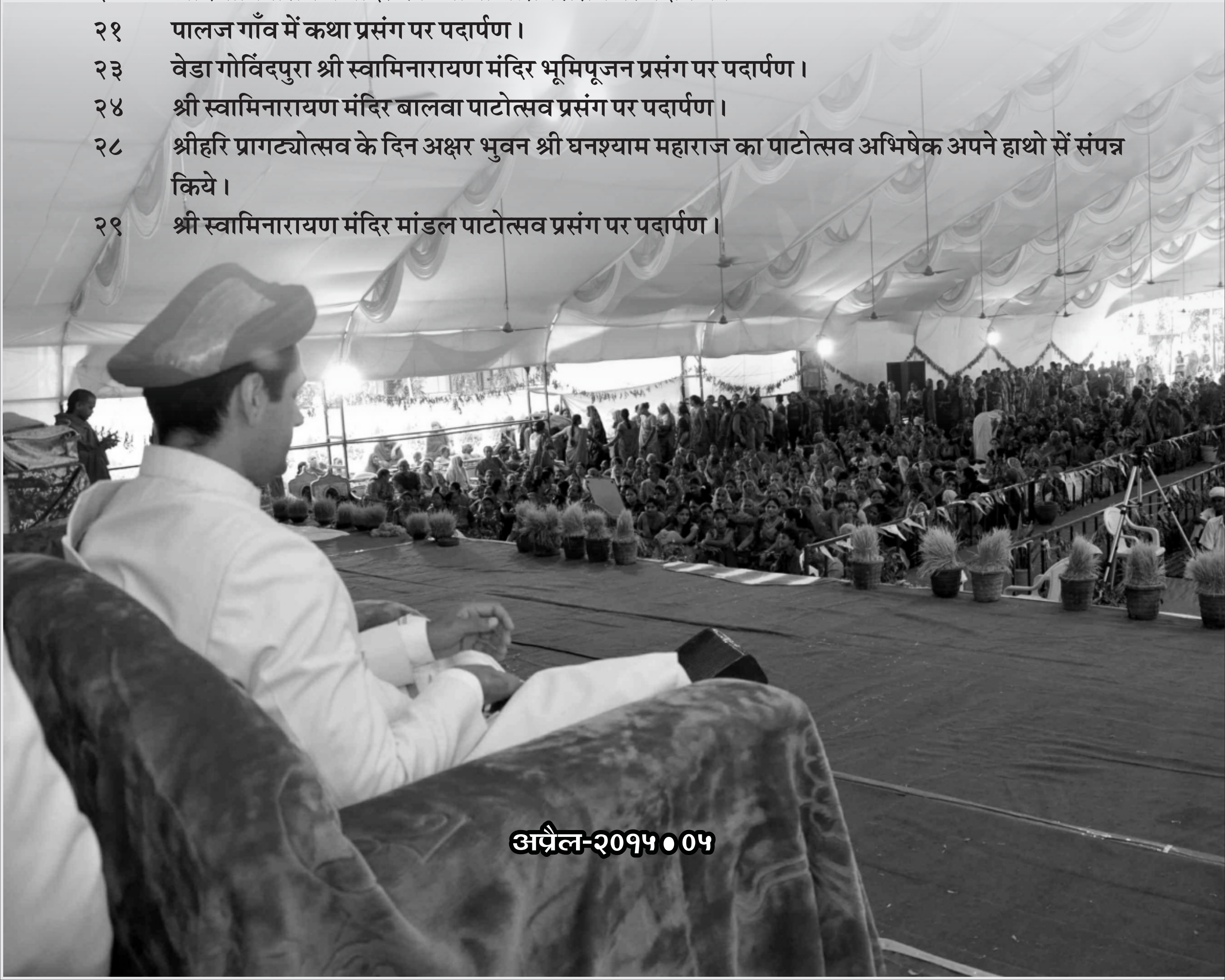

“मैं सदा आपके पास रहूँगा”

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

संप्रदाय के सबसे बड़े संत परमहंस स.गु. गोपालानंद स्वामी को भगवान स्वामिनारायण ने वडताल – अमदावाद देश की मध्य स्थिति करने के लिये रखे थे । वडताल में १८८२ कार्तिक शुक्ल एकादशी को देश विभाग किया गया था । उस समय श्री नरनारायणदेव की गद्दी पर बड़े भाई रामप्रतापजी के ज्येष्ठ पुत्र अयोध्याप्रसादजी को तथा वडताल देश श्री लक्ष्मीनारायणदेव की गद्दी पर छोटे भाई इच्छारामजी के पुत्र रघुवीर जी को आचार्य पद प्रतिष्ठित किये थे । दोनो देश के आचार्यों के हाथ को स.गु. गोपालानंद स्वामी के हाथ में सौंपे । दोनो आचार्यवर्य गोपालानंद स्वामी की मर्यादा रखते थे. इसी तरह गोपालानंद स्वामी अति समर्थ होते हुये भी १७ वर्ष के अयोध्याप्रसादजी को तथा १३ वर्ष के रघुवीरजी महाराज को श्रीजी महाराज के जैसा आदर भी देते थे ।

स.गु. गोपोलानंद स्वामी के शिष्य मंडल की संख्या ६० थी । सभी शिष्य दोनो देश में विचरण करते रहते । उन सभी शिष्यों में निर्गुण स्वामी श्रेष्ठ थे । वे सदा अपने गुरु की सेवा में रहते । स.गु. निर्गुणदासजी स्वामी महाराज की लीलाओं का प्रत्यक्ष दर्शन तो किये ही थे, इसके साथ गोपालानंद स्वामी के मुख से जिन-जिन लीलाओं का प्रत्यक्ष श्रवण करते उन्हें लिखते थे । इस तरह ६०७ लीला चरित्रों का संग्रह किये, जो आज स.गु. निर्गुणदासजी की वातो नामक ग्रन्थ संप्रदाय में प्रसिद्ध है । लीला नं. ३४३ में स्वामीजीने श्री गोपालानंद स्वामी के स्वमुख से सुनी हुई लीला को लिखते हैं कि “एक सें गढडा ने विषे श्रीजी महाराज पोतानो उतारो जे जे अक्षर ओरडी तेने विषे रात्रिने समें पोढ्य हता त्यां अयोध्याप्रसादजी महाराज श्रीजी महाराजनां दर्शन करवा गया त्यारे महाराजने कह्युं जे आटां तो केम आव्या ? त्यारे अयोध्याप्रसादजी ए कह्युं के आपने विनंती करवा आव्यो छुं । त्यारे महाराजे कह्युं जे कहो, त्यारे बोल्या जे, अमरा नरनारायणना देशमां साधु ब्रह्मचारी तथा सत्संगी थोड़ा छे ते व्यवहार शी रीते चालशे ? त्यारे महाराज बोल्या जे तमारा पक्षमां हुं छुं ते हुं तमारी सहाय करीश ने तमारा नरनारायणनो देश ए तो वृद्धि पामशे तमे कोई प्रकारनी चिंता राखशो मां । एम कहीने श्रीजी महाराज उभा थईने बाथमां दालीने बहुमलता हवा, ने खभो थाबडीने एम बोल्या जे जेना पक्षमां हुं छुं तेने कोई प्रकारनुं दुःख तथा मुझवण नहि आववा दवुं. अमारा दृढ विश्वास राखजो हुं तमारा समीपे रहीश । तमारो व्यवहार सर्व हुं चलावीश । एम कहीने महाराज विराम पाम्या । इति लीला ३४३ संपूर्ण ।

निर्गुणदासजी स्वामी ने ग्रन्थ के प्रस्ताव में कहा है कि में अपने गुरु गोपालानंद मुनि तथा अन्य जे सत्पुरुष तेमना थकी हरि एवा जे श्री सहजानंद स्वामी तेमनां मनुष्य देह वडे करेला एवां जे दिव्य चरित्र तेने सांभडतो हवो अने ते वार पछी श्रीहरि अन्तर्यामी पणे करीने पेर्यो एवो निर्गुणदास नामे साधुने जे हुं ते जे तो श्री सहजानंद स्वामीनुं ध्यान करीने पूर्वे सांभडेला श्रीहरिनां चरित्र वार्तायु लखुं छुं । तो श्रीहरिने प्रसन्न करवा सारु तथा श्रीहरिना जे एकांतिक साधु तेमने प्रसन्न करवा सारुं अने मुमुक्षु एवा जे जन तेमने निरंतर स्मृति थावाने सारु लखुं छुं ।

अने आजे हुं श्रीहरिना चरित्रनी वार्तायु लखुं छुं ते कोई आलोकमां पोतानी मोटप वधारवा सारुं निधिजे श्री स्वामिनारायण पुरुषोत्तम भगवान तेमना जे समय भक्तजन तेमने श्रीहरिना स्वरुपनुं जे सुख तेनी सिद्धिने अर्थे लखुं छुं ते हेतु माटे मे तेणे लखजे आ वार्तायु तेमां कोई जातनी वाधहोय तो तेनो त्याग करीने रुडी बुद्धिवाला जे जन तेमणे भगवानना भक्तने समझवा सारु आ वार्तायु लखवा रुप जे मारो गुण ते जे ग्रहण करवो । अने जे आलोकमां निर्मत्सर साधु होय तेजे आ वार्तायु सांभलीने मारी ऊपर अतिशय अनुग्रह करी एवी रीते हुं जे ते प्रार्थना करुं छुं ।

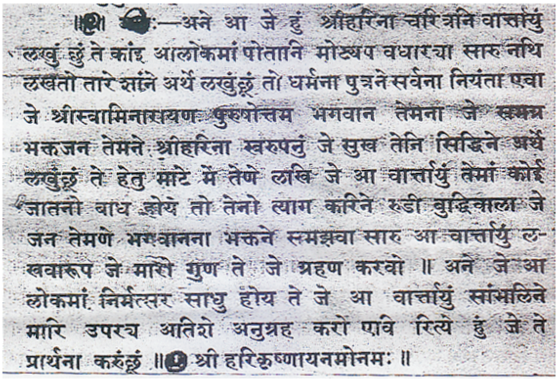
॥१॥ [illegible]:—अने आ जे हुं श्रीहरिना चरित्रनि वार्त्तायुं लखुं छुं ते कांइ आलोकमां पोतानि मोटप वधारवा सारु नथि लखतो तारे शाने अर्थे लखुंछूं तो धर्मना पुत्रने सर्वना नियंता एवा जे श्रीस्वामिनारायण पुरुषोत्तम भगवान तेमना जे समय भक्तजन तेमने श्रीहरिना स्वरुपनुं जे सुख तेनि सिद्धिने अर्थे लखुंछूं ते हेतु माटे मे तेणे लखि जे आ वार्त्तायुं तेमां कोई जातनो बाध होये तो तेनो त्याग करिने रुडी बुद्धिवाला जे जन तेमणे भगवानना भक्तने समझवा सारु आ वार्त्तायुं लखवारूप जे मारो गुण ते जे ग्रहण करवो ॥ अने जे आ लोकमां निर्मत्सर साधु होय ते जे आ वार्त्तायुं सांभलिने मारि उपरच अतिशे अनुग्रह करो एवि रित्ये हुं जे ते प्रार्थना करुंछूं ॥१॥ श्री हरिकृष्णायनमोनमः ॥

यह ग्रन्थ आज से ५० वर्ष पूर्व संवत १९२१ में सर्व प्रथम प्रीटिंग प्रेस में छपाया था । प्रकाशन शाह केशवलाल नारायणदास ।

नाम से पहचानते हैं,

श्रीहरि के अपर स्वरुप के मुख से

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के प्रथम अंश के रुप में ता. ६-११-१४ को उत्सव स्थल पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से विजय ध्वज स्तंभ का स्थापन हुआ । इस अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्रीने कहा कि द्विशताब्दी महोत्सव के समय से आज तक जो भी उत्सव हम सभी देखे हैं वे सभी क्रमशः एक से बढ़कर एक रहे हैं । इसका कोई कारण हो तो अपने आराध्य देवता श्री नरारायणदेव की कृपा मात्र है। उन की प्रसन्नता का ही ज्लंत उदाहरण है। अपने उत्सवो में कोई स्वम का स्वार्थ नहीं होता निःस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं इसलिये भी उसका परिणाम है । हम सभी का एक ही लक्ष्य होता है वह है - देव को प्रसन्न कर सकते हैं ए सभी समर्थ है, फिर भी श्री नरनारायणदेव की जब भी वात चलती है तब उनके केन्द्र में श्री नरनारायणदेव ही रहते हैं । अपना स्वार्थ छोड़कर देव का बनकर जो भी करते है वह केवल देव के लिये करते हैं। बाकी तो हम यह देखते हैं कि कुछ लोग ऐसे होते हैं कि स्वयं की जब प्रतिष्ठा होने लगती है और फोटो खिने लगता है तो देव बगल में छूट जाते हैं।

यह उत्सव निर्विध्न पूर्ण होने वाला ही है, क्योंकि यह देव का उत्सव है । हम लोग तो निमित्तमात्र हैं । इस उत्सव में छोटी भी कोई सेवा मिल जाय तो अपनी भाग्य समझनी चाहिये । इस तरह समझकर सेवा करलेनी चाहिये, यद्यपि आप लोग सेवा करते ही आये हैं । इस सभा में जो भी बैठे हैं उन्हें हम नाम से जानते हैं ।(सूक्ष्म दृष्टि से विचार करेंगे तो लगेगा कि यह जो वाक्य बोल रहे हैं स्वयं धर्मवंशी आचार्य में बिराजमान होकर श्रीजी महाराज बोल रहे हैं ।) उत्सव में लाखो लोग आने वाले हैं उन सभी की सेवा हम सभी को करनी है । उत्सव में ऐसे लोग भी आयेंगे जो मात्र-पानी नहीं है, यह नही है, कहने वाले आयेंगे - जिससे समाज में सिकायत फैले, ऐसे लोगों की भी सेवा करनी है । वे भी संतुष्ट होकर जांय । सत्संग का गुण लेकर जाय । कारण यह कि उत्सव में जो भी व्यवस्था थी वह ठीक थी पानी ठन्ढा था, भोजन अच्छा था ऐसा कुछ भी मन में विचार आयेगा । तो महाराज उसकी भला अवश्य करेंगे । यही उत्सव की सार्थकता है ।इसी से जीव का कल्याण होगा । भूतकाल में सत्संगी ऐसा कहते थे कि अन्तकाल में महाराज उन्हें लेने आयेंगे लेकिन आज वर्तमान काल में भी ऐसा कहने वाले हैं . जय स्वामिनारायण कहकर देह छोड़ देते हैं । यद्यपि अन्त काल बड़ा कठिन होता है, हम देखते हैं कि नाक में, मुख में नली लगीं रहती है । देह छोडत समय जीवात्मा को बहुत पीडा होती है । हम लोग बड़े भायशाली है कि हमें महाराज मिले हैं, ऐसे दिव्य सत्संगी मिले हैं, सत्संग मिला है । इस तरह महाराजने सभी को शुभाशीर्वाद दिया था ।

कवि दलपतराम - सत्संग के सबसे बड़े कविरत्न

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला
(अमदावाद)

ऊंट कहे - आसमामां, वांका अंगवाला भूंडा,
भूतलमां पक्षियो पशुआशर छे, बगलानी डोक बांकी,
पोपटनी चांच बांकी, ... ओड़खिये, सांभडी शियार बोल्युं।

दाखे दलपतराम,
अन्य तो एक वांकुं, आपना अढार छे।
शियाडे शीतल वा'वाय, पानखरे छऊं पेदा थाय,
पाके गोड़ कपास कठोड, तेल घरे लावे तंबोड,
उनाडे ऊंडा जल जाप, नदी सरोवर जल सुकाय,
पामे वनस्पति सौ पान, केसुडां रुडां गुणवान,
चोमासुं तो खासुं खूब ! दीसे दुनिया डूबा डूब,
लोक उच्चारे राग मलार ! खेतर वाले खेती कार !

चार-चार दशक तक गुजरात की शालाओं में विद्यार्थीयों की पीढी इसतरह के काव्यों का पठन की थी । इस तरह के काव्य बोधप्रधान काव्य तो हैं ही, लेकिन इसके साथ आनंद देने वाली भी काव्य हैं । इसीलिये ऐसे काव्य लोक प्रिय बने हैं।

इस तरह के काव्यों की रचना करने वाले कवि दलपतराम को गुजराती लोग पहचानते नहीं होंगे ? परंतु कम लोगो को यह खबर है कि कवि दलपतराम श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के आत्मसर्पित सत्संगी थे ।

१४ वर्ष की किशोर अवस्था में संवत १८९० वसंत पंचमी को भूमानंद स्वामी के पास कवि दलपतराम श्री स्वामिनारायण की मंत्रदीक्षा लेने के बाद पीछे मुड़कर कभी नहीं देखें । जीवन में १५ वर्ष की उम्र से ७९ वर्ष की उम्र तक कुल ६५ वर्ष तक बहुत छूप छांव देखे लेकिन प्रत्येक पल भगवान स्वामिनारायण की धर्म निष्ठा, नीति-नियम तथा आज्ञा-उपासना का कभी लोप नहीं किया, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा में विकास ही किया । कवि की साधना, उपासना, साहित्य साधना, समाज उत्थान तथा देश प्रेम की भावना उन सभी में उनकी धर्म निष्ठा तथाश्री स्वामिनारायण भगवान के वचनामृत में अवबोधित जीवन सत्य को प्रकाशित किया है।

इ.स. १८२० जनवरी की २१ ता. को कवि दलपतराम का जन्म हुआ ता । इ.स. १८९८-२५ मार्च को अवसान हुआ था। १८२० से १८९८ तक का इतिहास लिखा गया है । अपने सत्संग में कवि के साथ युगपुरुष भी थे. १९ वी सदी के पूर्वार्ध में भगवान स्वामिनारायण तथा उत्तरार्ध में नर्मद तथा गोवर्धनराम हुये थे । इसके अलांवा कवि दलपतराम भगवान स्वामिनारायण के उपदेश को १९ सदी में काव्यों

द्वारा मूर्तिमान किये थे ।

दलपतराम ब्राह्मण थे । उन दिनों इन्हें कवीश्वर के रुप में सन्मान मिलता था । १९ सदी के अन्तिम चार दशक में थोड़ा भी पढा हुआ गुजराती हो तो उसके मुख में कविदलपतराम की कविता ही होती थी । इसीलिये उन्हें कवीश्वर कहकर लोग संबोधित करते थे ।

कवीश्वर दलपतराम अर्वाचीन युग के गुजराती साहित्य के युग प्रहरी थे । शील-सदकाचार के जीवंत प्रतिमा थे । स्वामिनारायणीय तिलकचन्दन मस्तक की शोभा थे । स्वामिनारायण भगवान के अनन्य भक्त थे । उनका जीवन नीतिपरायण तथा निर्दाग था । उनकी वाणी से स्वामिनारायण भगवान का आदर्श निकलता था । वही उनके वर्तन में भी था । दलपतराम उगती हुई संस्कृति का निरीक्षण करते और उसे साकार रुप देते थे । उसका प्रभाव समाज पर पड़ता था । पौने दोवर्ष बीत गये फिर भी आज ''दलपत सूत्र'' दलपत मंत्र सर्वरोग नाशक औषधिहो गया है ।

सौम्य मूर्ति दलपतराम सात्विक गुणवाले थे । दलपतरामजी भाषा में काफी सुधार किये थे । ''सुधारा थै आ जुओ आग गाडी'' दलपतराम की दृष्टि में आगगाडी भी सुधारा का एक अंग थी । कितने आर्षद्रष्टा थे दलपतरामजी । प्राचीनता के ऊपर अर्वाचीनता को नीव रखने का काम किये थे। ''गार-गार कर पानी पीना'' यह उनका धर्मसूत्र था । इतिहास विद नवलरामभाई उनकी सुधारा के इतिहास में दलपतराम के विषय में बहुत कुछ लिखे हैं ।

आठ वर्ष के दलपतराम को गढडा में श्रीजी महाराज का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ था । उसके दो वर्ष के बाद ही महाराज का अन्तर्ध्यान हुआ था । वहीं उनके जीवन की स्मरणीका बन गयी थी ।

संवत १८९० वसंत पंचमी को मूली के उत्सव में वढवाण के हरिभक्त जा रहे थे । प्रेमानंद मामा के साथ दलतरामजी भी गये थे । स्वामी पंथी नही होना है ऐसा अपनी मां को कहकर गये थे लेकिन स्वामी पंथी होकर आये ।

देवानंद स्वामी दलपतराम के काव्य गुरु थे । पिंगल शास्त्र तथा भाषा भूषण नाम के अलंकार ग्रंथ को स्वामी देवानंद जी के पास दलपतरामजीने अध्ययन किया था । बाद में श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज की आज्ञा से श्री पुरोत्सव तथा शाकोत्सव का गुजराती में वर्णन किया । विना मंदिर में दर्शन किये भोजन नहीं करते थे । घर में भोजन के लिये संतो को निमंत्रण देते थे । संवत १८९० से १८९७ तक देवानंद स्वामी के पास अध्ययन किये ।

संवत १८९७ में मूली में दलपतराम की मूलजी शेठ के साथ भेंट हुई । उस समय उनकी उम्र २१ वर्ष की थी । मूली शेठ रामानंद स्वामी के बाद देवानंद स्वामी की परम्परा के थे । पिता डाह्याभाई, भूमानंद स्वामी, देवानंद स्वामी, मूलजी शेठ इत्यादि पवित्र लोगों के साह्यर्य में शिक्षण कार्य पूरा किये ।

संवत १९०१ में आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने दलपतरामजी से कहा कि ''आप अहमदाबाद रहकर संस्कृत का अभ्यास की जिये हम सभी खर्च देंगे ।'' इस तरह से उनका शैक्षणिक काल उत्तम ढंग से हुआ ।

कवि दलतपतराम का जीवन अत्यन्त रोचक था । इसका कारण यह कि सभी प्रसंग श्रीहरि की प्रेरणा से परिपूर्ण था । उन सभी प्रसंगो का आलेखन क्रमशः आगे के पाठ में किया जायेगा ।

Reference Books

कवीश्वर - दलपतराम भाग १ से
लेखक - नानालाल दलपतराम कवि
प्रकाशक - गुजरात विद्या सभा

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

लिखाविंत स्वामीश्री ७ सहजानंदजी महाराज अमदावाद मध्ये श्री ब्रह्मानंद स्वामी तथा वरताल मध्ये आनंद स्वामी नारायण वांचजो । बीजुं हमणे अमे नवुं प्रकरण फेरव्युं छे जे मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यांद स्वामी, आनंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, स्वयंप्रकाशानंद स्वामी, परमचैतन्यानंद स्वामी, महानुभावानंद स्वामी, भजनानंद स्वामी, आत्मानंद स्वामी, भगवदानंद स्वामी, इत्यादि पढने वाले बडे साधुओं को कहीं का महंत नहीं बनाना है । इसी तरह आचार्य अयोध्याप्रसादजी तथा आचार्य रघुवीरजी इन दोनो की इच्छा है, आ माटे ए साधु लख्या तेनी चाकरी मां एक-एक साधुने रहेवुं ने तेथी वधारे साधु राखवा होय तो आचार्यनी आज्ञाए करीने राखवापण पोताने जाणे राखवा नहीं । ने रहे ते विमुख छे । बीजुं जायगाना महंत कर्या छे तेनी विगत्य जे वरतालनी जायगाना महंत अक्षरानंद स्वामीने कर्या छे तथा अमदावादनी जायगाना माहंत सर्वज्ञानंद स्वामी गवैयाने कर्या छे. तथा जूनागढनी जायगाना माहंत गुणीतानंद स्वामीने कर्या छे तथा गढडानी जायगाना माहंत निष्कुलानंद स्वामीने कर्या छे तथा धोलेरानी जायगाना माहंत अद्‌भुतानंद स्वामीने कर्या छे तेनी विगत्य जे वरतालनी जायगाना माहंत अक्षरानंद स्वामीने कर्या छे तथा अमदावादनी जायगाना माहंत अद्‌भुतानंद स्वामीने कर्या छे तथा भुजनगरनी जायगाना माहंत वैष्णवानंद स्वामी ब्राह्मणीयाने कर्या छे । एवी रीते आचार्यनी मरजी लेईने सर्वे जायगाना माहंत जडभरतने कर्या छे । बीजुं हवेथी साधुनी मंडली बांधीने ज्यां ज्यां मुकशे ते आचार्य पोते मुकशे एम प्रकरण फेरव्युं छे । बीजुं आवी रीते आचार्यनी आज्ञा ने जे नहि माने ते वचनद्रोही गुरुद्रोही छे । बीजुं आ कागण वांचाववो ते सत्संगी सर्वेने सांभलते वांचवो ने सर्वे सत्संगी हरिभक्तोने तथा सर्वे परमहंसने आ प्रकारनी वार्ता जाहेर करवी । संवत् १८८५ ना मा.सुदी-९ ।

यह प्रसादीका पत्र हो.नं. ९ में रखा गया है, सभी पत्रका दर्शन अवश्य करे ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि फरवरी-मार्च-२०१५

फरवरी-२०१५

रु.।१५,१००/-	अ.नि. कालीदास धर्माभाई नाथाभाई परिवार डेमाई।
रु.।५,१००/-	अनादिमुक्त बजीबा स्मृतिमंदिर वीजापुर।
रु.।५,१००/-	कुबेरदास जेठीदास पटेल - विहारवाला
रु.।५,१००/-	रमेसभाई रवजीभाई दोंगा - बापुनगर
रु.।५,१००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर - डेमाई
रु.।५,००१/-	निहार देवल पटेल वस्त्रापुर - पंकजभाई पटेल
रु.।५,०००/-	अ.नि. रईबहन वेलाजी बापूजी परिवार - बालवा
रु.।५,०००/-	एक हरिभक्त - नारणपुरा
रु.।५,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर - कलोल।
रु.।५,०००/-	कंचनबहन वोरा - अमदावाद
रु.।५,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर - ग्राम समस्त - उदोदरा
रु.।५,०००/-	अमृतभाई कोदरभाई - डेमाई
रु.।५,०००/-	पटेल समीरकुमार मनहरभाई - डेमाई

मार्च-२०१५

रु.।१,११,०११/-	जवेरी एन्ड कं. एक्सपोर्ट - अमदावाद
रु.।११,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२३ गांधीनगर अ.नि. श्री रंगदासजी स्वामी के पुण्य स्मृति के निमित्त में कृते हरिकेशवदासजी स्वामी।
रु.।११,०००/-	धीरजभाई के. पटेल - अमदावाद
रु.।१०,०००/-	कौषिकभाई जोषी - अमदावाद।
रु.।१०,०००/-	अनसूयाबहन सुधाकरभाई त्रिवेदी - कांकरिया।
रु.।९,४००/-	पू. गादीवालाजी की चरण भेंट म्युजियम के पाटोत्सव निमित्त
रु.।६,६००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर मेडा।
रु.।५,५००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर - राणीप के पाटोत्सव के निमित्त
रु.।५,००१/-	राजुभाई एन. पटेल - मोटेरा।
रु.।५,०००/-	तुलसीभाई प्रेमजीभाई मारवी चांदलोडीया कृते रजनीकांत
रु.।५,०००/-	अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला डॉ. रशेष पोथीवाला के यहाँ प.पू. बड़े महाराजश्री के पदार्पण हेतु।
रु.।५,०००/-	विशालभाई दिनेशभाई जोषी - कांकरीया

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (फरवरी-मार्च-२०१५)

ता. १-२-१५	जगतप्रकाश स्वामी तथा धर्मस्वरुप स्वामी एवं वनराज भगत की प्रेरणा से मावजीभाई मोहन चावडा - बलोल।
ता. ३-२-१५	निव अंकितभाई पटेल के जन्म के निमित्त - नारणपुरा।
ता. ८-२-१५	विरजीभाई जेरामभाई रुपाणी - भावनगर - वर्तमान - लंदन
ता. ११-२-१५	चुनीलाल दुर्लभभाई सोनी परिवार - राणीप कृते - जयेन्द्रभाई, विजयभाई
ता. १२-२-१५	बिरल अशोककुमार पटेल - केनेडा।
ता. २१-२-१५	श्री स्वा. म्युजियम चतुर्थ वार्षिक स्थापना दिन के निमित्त महापूजा के मुख्य यजमान अ.नि. कालीदास - नरसिंहदास पटेल परिवार कृते गांडालाल अमृतभाई तथा विष्मुभाई, जितेन्द्र, दिलीप, समीर, डॉ. निकीकुमार (गुलाबपुरावाला) भोजन केमुख्य यजमान अ.नि. चंपाबहन गंगाराम पटेल - भूयंगदेव कृते डॉ. गंगाराम त्रिभोवनदास पटेल।
ता. २४-२-१५	दीपिकाबहन हरेन्द्रकुमार दवे - अमदावाद - कृते सत्येन्द्रकुमार (ओस्ट्रेलिया)
ता. २७-२-१५	बलदेव मणीलाल पटेल (डींगुचावाला कृते सुशीलाबहन पटेल कृते यु.एस.ए.)
ता. ६-३-१५	कान्तीभाई नानजीभाई हालाई - यु.के.
ता. ११-३-१५	जगदीशभाई केशवलाल पटेल - राणीप
ता. १२-३-१५	चीमनभाई भीखाभाई जागाणी- मुंबई - कृते प्रवीणभाई मंथन पी जागणी तथा डॉ. मगनभाई जागाणी।
ता. २२-३-१५	सां.यो. चंपाबहन के जन्म दिन पर पादरा कृते कांतिभाई मोहनभाई
ता. २८-३-१५	रविलाल प्रेमजी कारा - मांडवी कृते कपिल प्रेमजी कारा (लंडनवाला)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अमदावाद के केशव पंडित

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

बात हे अमदावाद की । नवा वास में सभा लगी थी । स्वामिनारायण भगवान विराजमान थे । आगे संत-हरिभक्त बैठे थे । वहाँ पर कोई पंडितजी आये । यद्यपि वे चार वेदों के जानकार थे, फिर भी वे केवल पंडित ही थे । पंडित का अर्थ है ‘‘जानकार’’ । शास्त्र के जानकार अक्षरशः शास्त्र के जानकार । वे उस सभा में आये । यथार्थ रुप में पंडित थे । लेकिन उनकी पंडिताई में भक्ति नहीं थी । जिस ज्ञान में भक्ति न हो वह ज्ञान शुष्क हो जाता है । मात्र ज्ञान का महत्व नहीं है । इस प्रकार का ज्ञान कम्प्यूटर में तो भरा हुआ रहता है । तो क्या उसे भक्त कहा जा सकता है । मनुष्य का मस्तिक केवल कम्प्युटर जैसा ही रहे तो उसके जीवन में आनंद की प्राप्ति नहीं होती ।

किसी प्राणी की पीठ पर मिट्टी भरकर बोरा रख दिया या शक्कर का बोरा रख दिया जाय तो उस प्राणी को क्या फायदा । उसके मुख में शक्कर डाली जाय तो मिठाश का ख्याल आयेगा अन्यथा ढोने मात्र की बात है । इसी तरह ज्ञान होते हुये भी क्रिया में न हो तो वह ज्ञान ‘‘ज्ञान भारः क्रियां विना’’ ।

स्वामिनारायण भगवान के साथ पंडित दीनानाथ भट्ट रहते थे । एक दिन भगवान ने भट्टजी से पूछा कि भागवत के श्लोक कितने हैं ? १८००० श्लोक है । उस में से कितने कंठ है ? महाराज ! मुझे सभी कंठ है । उस में आप अपने कल्याण के लिये कितने निश्चित किये है ? यह निश्चित नहीं किया हूँ । सभी क्रमशः याद अवश्य हैं लेकिन हमारे कल्याण के लिये कितने है, वह कभी सोचा ही नहीं । यही वात भागवत में आती है । उद्धवजी को बहुत ज्ञान था । लेकिन भगवान श्रीकृष्ण को ऐसा हुआ कि काका उद्धवजी को ज्ञान मात्र कम्प्यूटर जैसा ज्ञान है तो उन्होंने विचार किया इस ज्ञान में भक्ति का संचार हो जाय तो कल्याण हो जाय । इसलिये उन्हें गोपियों के पास भेंजते है और वे १५ दिन तक गोपियों की सत्संगति करते हैं, अव उनके ज्ञान में भक्ति का संचार हो गया और वे अब भक्त भी हो गये । भक्ति के विना का ज्ञान शुष्क ज्ञान कहा जाता है ।

ऐसे शुष्क ज्ञानवाले पंडितजी सभा में आये । उनका नाम था केशव पंडित । उनके साथ एक मित्र भी था । वह विद्वान था लेकिन महान क्रोधी था । दोनो खूब तैयारी करके आये थे । सभा में परास्त करने की भावना से आये थे । पंडित जैसे वेश तो था, बड़ी - बड़ी दाढी, जटा-जूट - सिखा - सूत्र त्रिपुण्ड इत्यादि से विद्वान लगता था लेकिन क्रोधकी अग्नि में सन्तप्त होने से विवेक ही न लगता था । जैसे लगता था उसका कुछ लुट गया है उसे लेने आये हो । भगवान स्वामिनारायण सभा में अपने आसन पर विराजमान थे । उनदोनो पंडितो को आते देखे तो संमान के साथ अपने पास बुलाकर बैठाये और आने का कारण पूछे । इतना सुनकर पंडितजी के मित्र ने महाराज से कहा कि इन सभी को क्यों एकत्रित किये हैं, जैसे तैसे शब्द बोलने लगा । इसके बाद वहेलाल के जेसिंगभाई पटेल खडे हो गये और कहने लगे कि भाई, जैसे-तैसे शब्द मत बोलो, शांति और विवेक के साथ बोलो, मर्यादा में रहकर बात करो । इसके बाद तो पंडित जेसिंह के सामने जैसा-तैसा बोलने लगा । स्वामिनारायण भगवान हंसते हुये जेसिंगभाई को समझाबुझाकर बैठा दिया । भगवानने कहा कि इन लोगो को झगड़ा करना है, हमें झगड़ा नहीं करना है । फिर भी हम इनसे जीत जायेंगे । आपके पडोशी आप से झगड़ा करने आयें तो आपको क्या करना चाहिये जिससे विना झगड़ा के आप जीत जांये । लेकिन यह काम कठिन है । जीतने का दो प्रकार है । प्रथम तो यह कि जब वह जोर-जोर से चिल्ला रहा हो तो आप भी उसके सामने उससे तेज आवाज में चिल्लाइये । दूसरी बात तो यह कि वह जितना भी चिल्लाये उसके सामने मौन रहिये । जिस तरह खुली जगह में चिल्लाये उसके सामने मौन रहिये । जिस तरह खुली जगह में आग का गोला पड़ा हो वह कुछ समय बाद अपने आप राख हो जायेगा । आग को बढने के लिये घास, कागज, कपड़ा, लकड़ी इत्यादि साधन चाहिये, जब यह साधन नहीं रहेगा

तो आग बढेगी कैसे, वह स्वयं शान्त हो जायेगी। इसी तरह आग के गोले के समाने क्रोधकी स्थिति है - जब सामने कुछ प्रतिकार नहीं होगा तो क्रोधअपने आप शान्त हो जायेगी। ऐसा कहकर महाराजने जेसिंगभाई को बैठा दिया।

(क्रमशः आगे के अंक में)

●

प्रकृति की सत्य पहचान

(नारायण बी. जानी - गांधीनगर)

एक ब्राह्मण को पुत्र नहीं था। वह मंत्र-तंत्र दवा में बहुत पैसे खर्च किये। फिर भी इच्छित परिणाम नहीं आया। उसके पास संपत्ति बहुत थी . लेकिन वह पुत्र के अभाव में बहुत उदास रहता था। अंत में वह मरने के लिये जंगल में गया। वहाँ पर तपस्वी से भेटं हो गई। ब्राह्मण का दुःख सुनकर तपस्वीने सन्मान प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। लेकिन तपस्वी ने पुत्र का मुख देखने के लिये मना कर दिया। पुत्र का मुख देखोगे तो मृत्यु हो जायेगी। उसके मनमें हुआ कि बाद में जो होना हो हो, अभी आशीर्वाद आप दीजिये।

वरदान प्राप्त करके ब्राह्मण अपने घर आया। समय बितते उस ब्राह्मण के घर बालक का जन्म होता है। उसी समय ज्योतिषीने बताया कि आपको पुत्र मुख नही देखना है। आपकी दृष्टि पडते ही अनिष्ठ हो जायेगा। उस ब्राह्मण के मन में हुआ कि घर में रहकर पुत्र मुख न देखा जाय यह कैसे हो सकता है। यदि सन्यासी हो जाय तो भी पुत्र बियोग तो बना ही रहेगा। लेकिन बंस चलाने के लिये ऐसा करना ही पड़ेगा। यह सभी विचार कर यात्रा के लिये निकल पड़े। थोडा समय तीर्थयात्रा करके सन्यासी होकर अपने गाँव के नजदीक एक आश्रम बनाकर रहने लगा। समय बितते वह ब्राह्मण बालक बड़ा हो गया। अब यह अपनी माता से अपने पिता के विषय में पूछता और कहता कि गाँव के लोग मेरे पिता के विषय में नाना प्रकार की बात करते हैं। यह ब्रहाना करती, लेकिन एकदिन वह जिज करके बैठा और माताने सभी बातबता दी कि तुम बड़ी तपस्या के बाद प्राप्त ऋषि के आशीर्वाद से प्राप्त हो तुम्हारे मुख दर्शन से पिता की या तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी उसने विचार किया कि जन्म का क्या प्रयोजन जब पिता दर्शन न होसके। अपने काका को साथ लेकर सन्यासी पिता को ढूढने निकल पड़ता है।

कितने महीने तक इधर-उधर खोजते रहे। लेकिन कहीं भेंट नही हुई। एक समय किसी नगर में सायंकाल में प्रवेश करते हैं। उसी समय कोई उस नगर में प्रवेश करने से रोकता है और कहता है कि इस देश में प्लेग का रोग फैला है। बाहर से आने वालों का प्रवेश बन्द है। दोनो वापस आते हैं।उस समय अंधकार हो जाता है। हिंसक जन्तुओं की आवाज सुनाई देने लगती है। इतने में विशाल मकान दिखाई देता है। उसके दरवाजे पर जाकर दस्तक देते हैं, भीतर से आवाज आई चले जाइये यह सन्यासियों का आश्रम है। इन दोनो ने कहा कि महाराज ! हमें रात्रि बितानी है, बाहर रात्रि हो गयी है हिंसक जन्तुओ से बचने के लिये आप के आश्रम में रात्रि में आराम करके प्रातः चले जायेंगे। हम लोग ब्राह्मण हैं। फिर भी वह सन्यासी दरवाजा नहीं खोला। वे दोनो विचार करते है, कि जंगली जानवरो खाजाय उसकी अपेक्षा दीवाल डांककर रात्रि बिता लेना ठीक है, भले बाबा अपमानित करेगा वह हम सहन करलेंगे। ऐसा सोचकर दिवाल से कूद कर ज्यों भीतर गये कि सन्यासी गाली देते हुये बडे क्रोधके साथ वहाँ आता है और अपने पुत्र को देखता है, वहीं पर पुत्र मरजाता है। इसका पता उस सन्यासी को नही हुआ कि उसका यह पुत्र है। रात्रि का समय लाश उठाकर बाहर फेंक देता है। उसके बाहर निकाल देता है। बाहर अपने भतीजे को रहा देख कर पिछली बात सुना सुनाकर जोर-जोर रोने लगता है। सन्यासी का भी नाम लेकर होता है। उस सन्यासी के मनमें होता है कि कहीं पर मेरा पुत्र तो नहीं है। जाकर बाहर देखा तो ठीक घटना वैसी ही थी। अब वह पागल होकर चिल्ला - चिल्लाकर रोने लगा।

अब आप विचार कर सकते है कि जो व्यक्ति थोड़े समय पूर्व निर्दयता का व्यवहार करता था उसमें एकाएक इतना परिवर्तन क्यों हो गया। उसमें यही कारण था कि पहले यह ज्ञात नही था कि यह मेरा बेटा है, जब मेरा बेटा है ऐसा ज्ञान होता है तब ममत्व अपना पन उसमें दिखाई दिया और पालक की तरह रोने लगा। ममत्व - अपना पन ही दुःख का कारण है। जो व्यक्ति नाशवंत वस्तु में सुख की चाहना रखता है वह मूर्ख है। वह ऐसी वात है जैसे रात्रि के समय सूर्य का दर्शन स्वामिनारायण भगवान शिक्षापत्री में मामा की व्याख्या की है - ''जीव-देह तथा देह के संबंधियों के विषय में अहं-ममत्व कराने वाली ही माया है। जिन्हे भगवान का आश्रय हो वे इस माया से तरजाते हैं।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"आनंद की खोज कब बन्द होती है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

परमात्मा की प्राप्ति कठिन नहीं है परंतु परमात्मा ने प्राप्ति की इच्छा होना कठिन है । हम सभी के आज तक कितने ही जन्म हो गये होंगे ? हम इस संसार के चक्र में धूम ही रहे हैं । इसका अर्थ यह है कि आज तक हम परमात्मा को प्राप्त करने की इच्छा ही नहीं किये । संसार बाधक नहीं है । परंतु संसार से सुख की चाहना ही बाधक है । हमें संसार का उपयोग किस तरह से करना चाहिये यह अपने ऊपर है । जो मनुष्य अपने जीवन को उपयोगी बनाले तो वह महान हो सकता है । इसका अर्थ यह है कि हम जो काम करे वह ध्यान रखकर करें । जो कुछ हम करे उस का उद्‌देश्य रखकर करें । इसकार्य करने से हमें क्या प्राप्त होगा ? हम जो कार्य करते हैं यह मुक्ति का कारण है या बन्धन का कारण है । अपना मन जब चंचल होता हो तब अच्छे विचार नहीं आते । मन की अपेक्षा बुद्धि के उपर विशेष महत्व दिया गया है । इसलिये कि बुद्धि को निर्णयात्मक कहा गया है । बुद्धि को स्थिर कहा गया है । अज्ञानपूर्वक लिया गया दुःख का कारण होता है । सभी को एकांत में बैठकर चिन्तन करना चाहिये कि हमें यथार्थरुप से क्या चाहिये तो उत्तर मिलेगा - सुख तथा आनंद । सभी की प्रकृति एक समान नहीं होती फिर भी सुख और आनंद के लिये सभी के विचार एक जैसे होंगे । ९९% प्रतिशत लोग ऐसा कहेंगे कि मैं सुख के लिये दौडादौडी करता हूं . लेकिन भी को सुख नहीं मिलता । जो लोग सुख की खोज में दौड़ते हैं उन्हें सुख नहीं मिलता क्योंकि संसार का सुख सच्चा नहीं है । शास्वत सुख में सुख और आनंद है । शास्वत सुख-परिवार घर, संपत्ति, संतान, सत्ता इत्यादि में नही है । इसी तरह इन सभी में आनंद भी नहीं है । शास्वत सुख तथा आनन्द तो परमात्मा में है । परमात्मा की तरफ गति करने से पूर्व सत्संग करना आवश्यक है । देवता लोग भी अनंतआनंद की प्राप्ति की झंखना करते हैं । स्वर्ग में भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया इत्यादि मर्त्यलोक की तरफ होती है । इन्द्र भी अपने सिंहासन को पाने के लिये भयंकर युद्ध किये थे । लेकिन देवता और मनुष्य में फर्क इतना ही है कि मनुष्य लोक की अपेक्षा स्वर्ग लोक में आवश्यक है । लेकिन देवताओं से हम भाग्यशाली इसलिये हैं कि हमे भगवान की प्राप्ति हो सकती है, उन्हें प्राप्त करना हो तो मनुष्य लोक में आना पडेगा । शरीर जड है आत्मा चेतन है । शरीर को संसार की चाहना होती है, जीवात्मा को परमात्म की चाहना होती है । परमात्मा को क्या चाहिये तो परमात्मा को कुछ भी नहीं चाहिये । इसी तरह जो मनुष्य छल-कपट छोड़कर भगवान की शरणागति स्वीकार कर लेता है उसके ऊपर भगवान की कृपा होजाती है उसी में शास्वत सुख तथा आनंद समाया हुआ है । संसार को पकड़े हुये अर्थात् संसार के सुख की चाहना को मूर्खता पूर्ण कहा जायेगा । इसके लिये अन्तःकरण को शुद्ध रखना होगा, उसी अन्तःकरण में परमात्मा का वास होगा, फिर सुख-शान्ति का आभास होने लगेगा । आत्मा को प्राप्ति का आभास होने लगेगा । शरीर एकधन है परमात्मा साध्य है जीव बीच में है । जीव शरीररुपी साधन से परमात्म को साध्य कर लेता है । इसके लिये अभ्या सकी जरुरत है ।

नित्य परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिये और नित्य अपने से हीतप्रश्न करना चाहिये - १. मनुष्यजीवन उद्‌देश्य क्या है ? हमें क्या चाहिये । सभी से किमती वस्तु क्या है ? परमात्मा न प्राप्ति की व्याकुलता हो तो परमात्मा निश्चित मिलेंगे । किसी ने किसी रुप में परमात्मा संकेत अवश्य देते हैं, मात्र विचार करने की जरुरत है ।

●

निंदा ही महान पाप है

- सांख्ययोगी कोकीलाबाई (सुरेन्द्रनगर)

स्वदोष देखना अधिक उचित है परदोष से । मनुष्य का स्वभाव अपने में दोष को देखना नहीं चाहता और पराये लोगों के दोषो को देखने में तत्पर रहता है । दूसरो में दोष होने

पर भी उस पर मिथ्या आरोप लगाने में उसे बहुत आनंद आता है। उसे ही निंदा कहते हैं। निंदा करना योग्य नहीं है। मनुष्य को दूसरें के अवगुण देखने से बेहतर है कि स्वयं में सुधार करना चाहिए। एक संत पुरुषने कहा है कि,

''तु जे दुरानी कहा पडी, तुं अपनी नीवेड,
तेरा नाव समुद्र में, खेड खेड अरु खेड।''

तुझे दूसरों की कोई अवश्यकता नहीं है। अपना स्वयं का कार्य सही से कर ले वही बहुत है। अपना जहाज समुद्र में है तु उसे चला अर्थात् तुझे परायों की फिक्र क्यों है ?

जो मनुष्य पर निंदा करता है वह मनुष्य मलमूत्र उठाने वाले से भी अधिक नीच है। वह तो वैसा लेकर महलमूत्र उठाता है। परंतु नींदक बिना पैसा लिये ही परायों के पाप रुप मलमूत्र उठाता है। भगवान के भक्ति में नींदा दोष समान है। दुष्ट मनुष्य अपने मुख तथा होठ से दूसरो के नींदा रुपी मल-मूत्र को साफ करता है।

''निंदा करतल मत मरजो, मरजो धरका पुत,
ओरकनुं पावन करे, आप सर्जे भूत।''

इस चोपाई का अर्थ यह है कि निंदा करे उसे भगवान १०० वर्ष का आयुष्य दे। क्योंकि हमारा पाप उससे कम होगा। इसीलिए समझदार व्यक्ति को किसी की नींदा नही करनी चाहिए। सन्यासी की नींदा से पशुधन का नाश होता है। स्त्रीयों की नींदा से धन का, राजा की नींदा से कुलका, गुरु की नींदा से ऐश्वर्य का नाश होता है। पुण्य का नाश होता है। श्रीकृष्णम् वंदे जगत गुरु। गुरु निंदा होने वाली स्थान से तत्काल कान बंद करके चले जाना तथा भक्तों की निंदा सुनने वाला यदि निंदक को दंड न दे तो निंदा सुनने वाले का संम्पूर्ण पुण्य नष्ट हो जाता है। नरक में वास करना पडता है। गुरु की निंदा सुननेवाले को यदि इतना दंड मिलता है तो सोचिए निंदक को कितना दंड मिलेगा। इसीलिए गुरु की निंदा नही करनी चाहिए। किसी के भी दोष को किसी के आगे प्रस्तुत करना ही निंदा है। और यदि किसी में दोष ना होने पर भी उसे कहना द्रोह समान है। भगवान, भक्त, ब्राह्मण, गरीब इन चारों का द्रोह नही करना चाहिए। निंदा और द्रोह नरक का मार्ग है। इसलिये निंदा महान पाप है। और सेवा जैसा कोई और पुण्य नहीं है। पाप नही करने पर भी अपने जीवन को वश में रखने के कारण दूसरों के पाप का भोग करना पडता है। जिस प्रवृत्ति से पुण्य संस्कारो का नाश होता है ऐसी निंदा रुपी प्रवृत्ति क्यों करनी ?

कुछ लोगों की जीभ को बोलने का दुगुर्ण होता है। इसीलिए उन्हे रोक नही सकते। जीभ में हड्डी नही होती। प्रभु ने आंख, कान को खुल्ला रखा है। परंतु जीभ को उन दांतो की कैद में रखा है। होठ रुपी दो बडे दरवाजे किले के रुप में उसे बंद रखते हैं। फिर भी वह शांत नही रह पाती। व्यवहार के दूसरे अच्छे कामो में भी शांत नही रह पाती। मनुष्य यदि कुछ खरीदने जाता है तो अच्छा-बुरा देखकर भाव पूछकर ही खरीदता है। परंतु बोलने में अच्छे बूरे का ख्याल नहीं रखता है यह सबसे बड़ी भूल है।

समझदार को तोलकर आवश्यकता अनुसार ही बोलना चाहिए। वह भी जो सत्य, प्रिय, और जो हितकर हो। परनिंदा सबसे गलत प्रवृत्ति है। विवेकी मनुष्य ऐसी प्रवृत्ति कभी नही करते। दुनिया विशाल है। जो जैसा करेगा वैसा भुगतेगा। हमें हमारा भविष्य नहीं बिगाडना चाहिए। पर निंदा करने में अपना समय व्यर्थ नहीं बिगाड़ना चाहिए। परनिंदा नही करनी चाहिए और न सुननी चाहिए निंदा नरक प्राप्ति का मार्ग है।

कुछ लोंगो का स्वभाव हो जाता है निंदा करनेका। ईन्द्रियों तथा अंतःकरण को विकारो कु-स्वभावों की हानि से रोकना कठिन है। धीरे-धीरे दोषो को जानकर उनका त्याग करना चाहिए। मनुष्य अपने अति भारी दुःख को भी समय के साथ भूल जाता है। उसी प्रकार मनुष्य अपने दुर्गुण को प्रयत्न पूर्वक छोड सकता है। यदि किसी स्त्री के पति का अवसान हो जायें तो कुछ दिन, महीने या वर्षो के बाद वह अपने पति की मुखाकृति भी भूल जाती है। जब अवसान होता है तो आंखो के अश्रु रुकते ही नहीं है। और कुछ वर्षो के बाद अपने किसी रिश्तेदार के विवाह में ''आज छरीयो गढ जीत्यारे आनंद भयो'' जैसे लग्नगीत गाती है। उसी प्रकार मनुष्य का हृदय स्थिति स्थापक स्वभाव का है। समय के साथ मनुष्य के अंतःकरण में स्थित संस्कार को नष्ट कर देता है। इसीलिए हृदय का घाव धीरे-धीरे कम हो जाता है। मनुष्य को भी दुर्गुण और परनिंदा को धीरे-धीरे छोड़ देना चाहिए।

आत्यंतिक कल्याण की इच्छा रखने वाले मनुष्य को

सदैव जागृत रहना चाहिए । मनुष्य जब कभी कही बाहर जाता है तो उसे अपने नेत्र तथा वाणी पर काबू रखना चाहिए । अयोग्य वार्तालाप या परनिंदा करके धर्मबल को नष्ट नहीं करना चाहिए । जीभ न खानेवाली वस्तु खाकर पेट तो खराब करती ही है परंतु न बोलने को बोलकर व्यवहार भी बिगाड़ती है । भगवानने एक जीभ तथा दो कान दिये है । उसका अर्थ यह है कि दोनो कान से सुने । मुख से जीभ से तो विषमय या अमृतमय वाणी बोली जाती है । हम किसी से न बोले तो बात बिगडती नही है । परंतु यदि कुछ बोलना है तो अच्छा ही बोले उससे भी बात नही बिगड़ेगी परंतु आवश्यक बोल कर बात और रिस्ता नही बिगाडना चाहिए । पेट में जानेवाला विष मनुष्य को एक बार में नष्ट कर देता है परंतु कानो से जानेवाला विष मनुष्य को धीरे-धीरे समाप्त करता है । परनिंदा तथा परचर्या साधक के मार्ग में बाधक है । जीवन में यदि सुखी रहना है तो पानी को कपड़े के टुकडे से और वाणी को विचार विवेक की छननी से छान कर ही उपयोग करना उचित है । कम बोलकर मौन रहने में बहुत लाभ है । फूल सभी को अधिक प्रिय है क्योंकि वे मौन रहकर सुवास प्रदान करते है । जीव को धैर्य से वश में रखना उचित है । पर निंदा से बचना चाहिए । जिससे धर्मबल की प्राप्ति हो सके ।

●

जहाँ एकता वहाँ हरि तथा सुख

- सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा (मेडा)

प्रिय भक्तों ! सत्संग के तीन बेटे हैं - सद्भाव, स्नेह, एकता । ये तीनो सदा साथ ही रहतें हैं । करोड़ो वर्ष बीत गये लेकिन ये तीनों कभी अलग नहीं हुये । जहाँ सद्भाव हो वहाँ एकता अपने आप आती है । भक्तों ! एकता में आनंद है, संपत्ति में नही । जहाँ एकता न हो वहाँ की रसोई में प्रति छप्पन भोग बनता हो फिर भी उसके घर में आनंद नहीं रहेगा । जहाँ एकता हो वहाँ आधी रोटी बांटकर खाने में आनंद है, गौरव है । किसी क्षेत्र में आनंद से दिन बिताना हो तो एखता जरुरी है । सभी का मूल एकता है । सभी सुख का मूल एकता है । प्रिय भक्तों ! कुसंप तो भोजन में कंकड के समान है । एकता न हो तो कुटुम्ब में या सत्संग में या किसी भी क्षेत्र में मजा बिगाड़ देती है । एकता के बिना समाज में कही सुख नहीं मिलता । अपने हाथ की अंगुलियों में कितनी एकता है अलग-अलग होते हुये भी काम पड़ने पर सभी एक हो जाती हैं । गुजराती में एक कहावत है - ''बंधी मुठ्ठी लाख की'' मुठ्ठी की एकता का उदाहरण समझने लायक है । सभी अंगुलियां एक समान नहीं है, अलग-अलग हैं फिर भी कार्य के समय एक साथ होकर असंभव कार्य को संभव कर देती हैं । इसी तरह हम सभी सत्संगी एक पिताकी संतान है वे है अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण - इन्हीं की आज्ञा में रहकर नीति-नियम को करते रहने से अपना तथा सत्संग का विकास संभव है ।

एकता के विना कहीं सुख नहीं मिलता । जिस तरह झाडु जब डोरी से बांधकर एक सूत्र में रहता है तो घर की गन्दगी को बाहर करने में समर्थ होता है वही एक साथ न रहे अलग-अलग हो जाय तो खूद कूड़ा बन जायेगा । इसी तरह हम सत्संगरुपी डोरी से बंधे रहेगे तो अपने भीतर आत्म शक्ति आयेगी । आप अधिक कमाते हों या कम, अधिक पढे हों य कम, इससे कुछ नहीं होता लेकिन घर में एकता का वातावरण हो तो स्वर्ग जैसा वातावरण बन जायेगा । घर में एकता बनाये रखनी हो, कुटुंब में सुख की चाहना हो तो, आनंद की चाहना हो तो, संपत्ति की चाहना हो तो, छोटे०बड़े सभी में एकता का वातावरण कैसे बना रहे यह समझना आवश्यकत है । घर में एकता हो तो भगवान स्वामिनारायण उस घर में से बाहर कभी नहीं जायेंगे । कुसंग हो तो भगवान को उस घर में कोई रोक नहीं सकता । भगवान एक मिनट भी रुक नहीं सकते ।

उत्तर गुजरात में करजीसण नामका एक गाँव है । भगवान स्वामिनारायण उस गाँव में ३४ बार गये थे । यात्राधाम जैसा वह गाँव है । करजीसण के हरिभक्त गोविंदभाई बड़े अच्छे सत्संगी थे। श्रीजी महाराज प्रसन्न होकर कहे कि आपको जो भी चाहिये मांग लीजिये तो गोविंदभाईने कहा कि महाराज ! हमें कोई इच्छा नहीं है, फिर भी भगवानने कहा कि आपके घर में जो अनाज की कोठी है उसमें से अन्न कभी घटेगा नहीं । उस अनाज को घर के उपयोग में लिजियेगा तथा दूसरों को दान दीजियेगा । गोविंदभाईने पूछा महाराज ! इस कोठी में से कब तक अन्न कम नहीं होगा तब महाराजने कहा कि आप घर में जब तक पारिवारिक एकता रहेगी । ऐसा ही हुआ । वर्षो बीत गये इस कथा को,

प्रत्येक को अपने घर के विषय में ऐसा ही सोचना जाहिये । कुसंप हो तो घर के मिट्टी के घड़े का पानी भी समाप्त हो जाता है। इसलिये एकता हर पक्ष में आवश्यक है।

मछियाव की बुआ की बात पूरे सत्संग में प्रसिद्ध है । श्रीजी महाराज एकबार एक महिने तक मछियाव में रुके थे। वहीं पर वसन्तोत्सव किये थे । महाराज बूआ को बहुत समझाये फिर भी वे महाराज की आज्ञा के विरुद्ध बेटे की बहु को वापस बुला ली । इससे महाराज नाराज होकर वहाँ से चले गये। भक्तों सास-बहु के झगड़े के कारण महाराज तथा संत वहाँ से भूखे चले गये । जहाँ पर संपत्ति की कोई सीमा नहीं थी । वहां पर दुःखद दारिद्रता की स्थिति आगयी । प्रिय भक्तों ! एकता जिस परिवार में न हो - वह सास-बहु की हो या मा-बेटे, बाप-बेटे भाई-भाई या किसी भाई-बहन अथवा परिवार के किसी भी सदस्य की फूट रगड़ा-झगड़ा - तकरार ये सभी उस घर को नर्क बना देती है। यदि आप के घर में एक सूत्रतता - एकता नहीं होगी तो वहाँ पर भगवान आपके घर के सिंहासन से रुढकर चले जायेगें और फिर आपके घर का मंगल, शान्ति, सुख सब खत्म हो जायेगी । क्योंकि ''जहाँ एकता वहाँ हरि का निवास'' ।

प्रिय भक्तों ! घर में या सत्संग में एकता की चाहना हो तो मन में जो अहंकार का भाव है ''अहमपना'' का भाव है उसका त्याग करना होगा । मैं बड़ा हूँ, मैं पढा हूँ, मैं ज्ञानी हूं, मैं बहुत सुंदर हूँ, इत्यादि के अहंकार का परित्याग करने पर ही घर-परिवार की एकता टीकती है, उसके बाद सुख-शान्ति मिलती है, अन्यथा वह घर-परिवार नरक हो जाता है। जीवन में अहंकार नहीं आने देना चाहिये। श्रीजी महाराज कहते हैं -

दासना दास थई रही, जे रहेशे सत्संग मां ।
भक्ति तेनी भली मानीश, राचीश तेना रंग मां ॥

प्रिय भक्तों ! भगवान श्री स्वामिनारायण तथा बड़े संत एवं श्रेष्ठ पुरुषो के चरण में ऐसी प्रार्थना करें कि सत्संग में या घर में एकता बनी रहे जिससे परिवार सुख-शांति का अनुभव कर सके।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

१. प्रकाशन स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२. प्रकाशन समय : प्रति मास
३. मुद्रक का नाम : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
राष्ट्रियता : हिन्दी
पता : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४. संपादक का नाम : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
राष्ट्रियता : हिन्दी
पता : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५. मालिक : श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
राष्ट्रियता : हिन्दी
पता : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

सत्संग समाचार

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९२ वाँ पाटोत्सव महोत्स मनाया गया

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री अहमदाबाद में बिरामजान पर कृपालु भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणेव का १९२ वाँ पाटोत्सव अ.नि. प.भ. प्रहलादभाई परिवार के दिव्य संकल्प से मनाया गया। प.भ. दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल (स्कीम कमिटी सभ्यश्री), प.भ. रमेशभाई प्रहलादभाई पटेल तथा प.भ. प्रकाशभाई प्रहलादभाई पटेल, प.भ. अमितभाई, प.भ. तुशारभाई आदि परिवारने ता. २०-२-१५ को श्री नरनारायणदेव का १९२ वाँ पाटोत्सव के उपलक्ष में श्री नरनारायणदेव की पूजाविधिकी।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-३ को ता. २१-२-१५ को प्रातः श्री नरनारायणदेव समक्ष यजमान परिवारने पूजन अर्चन आदि कार्य किया। प्रातः ६-३० से ७-०० तक परम कृपालु श्री नरनारायणाआदी देवो का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। हजारो हरिभक्तोंने दर्शन का लाभ लेकर धन्यता मेहसूस की। प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार के प.भ. दशरथभाई (ट्रस्टीश्री) प.भ. रमेशभाई, प.भ. प्रकाशभाई तथा उनके परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये। इस प्रसंग में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत आत्मप्रकाशदासजी, स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी, स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री, गांधीनगर) आदि संतोने परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का महत्व समजाया तथा यजमान परिवार की देव, आचार्य के प्रति श्रद्धा की प्रशंसा की। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती करके आशीर्वचन दिये। (शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में श्रीहरि प्राकट्योत्सव रामनवमी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से यहाँ के कालुपुर मंदिर में चैत्र शुक्लपक्ष-९ को श्रीहरि प्राकट्योत्सव श्री रामनवमी उत्सव धूमधाम से मनाया गया। प्रातः ६-३० से ७ बजे तक अक्षर भुवन बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक सम्पन्न हुआ। रात ८-३० से १०-०० बजे तक मंदिर के प्रसादी के अंगन में प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में श्री जयेशभाई सोनी तथा उनकी टीमने सुंदर भजन संध्या कार्यक्रम तथा गरबा का कार्यक्रम हुआ। बहनों की हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा पधारी थी।

यहाँ पर १०-१० मिनिट पर प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से श्रीहरि प्राकट्योत्सव आरती धूमधाम से की गयी। आतीशबाजी भी की गयी। समग्र प्रसंग में ब्र. राजेश्वरानंदजी, हरिचरण स्वामी, कोठारी जे. के. स्वामी, योगी स्वामी आदि संत मंडलने सुंदर व्यवस्था की।

(उर्मिक पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट १९ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से महंत स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर से-२) के मार्गदर्शन द्वारा परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की प्राकट्यभूमि समान नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान घनश्याम महाराज, श्री धर्मदेव हरिकृष्ण महाराज आदि देवों के १९ वें पाटोत्सव प्रसंग पर महा कृष्णपक्ष-५ ता. ९-२-१५ का प्रातः में प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से षोडशोपचार महाभिषेक तथा छप्पन भोग अन्नकूट आरती की गयी। संतो की अमृतवाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री के सानिध्य में सुंदर नकशीकाम की हुई। नवनिर्मित पासाण की शाखों का शास्त्रोक्त पूजन-अर्चन किया गया। यजमान पद का लाभ प.भ. हिमंतभाई वंशरामभाई लक्कड, ह. परम धर्मेन्द्र लक्कड परिवारने किया। (शा. अभय स्वामी, नारायणघाट)

अनादि मुक्तराज पू. वजीबा नूतन स्मृति मंदिर विजापुर में मूर्ति प्रतिष्ठा आयोजन

सर्वोपरी श्रीहरि के साथ मुक्तो की बहनों की पंक्ति में जिनका सर्वोपरि स्थान है ऐसे अनादि मुक्तराज पू. वजीबाई के विजापुर गाँव में ता. ३०-१-१५ से ता. ३-२-१५ तक नूतन स्मृति मंदिर एवम् श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (गांधीनगर महंतश्री) के मार्गदर्शन से, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल हिरावाडी (टीम नं. ५) तथा विजापुर तथा आस-पास के गाँव के सभी भक्तों के साथ सहकार से अ.पू. वजीक स्मृति मंदिर के निर्माण कार्य धूमधाम से सम्पन्न हुआ । जमीन संपादन में सुवर्ण आर्थिक सहकार श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद से प्राप्त हुआ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में धर्म के साथ समाज सेवा का कार्य भी किया गया । शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर पंच दिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा, पोथीयात्रा, श्री घनश्याम जन्मोत्सव, नगरयात्रा, प्रतिष्ठा, यज्ञ, ब्लड़ डोनेशन केम्प, विद्वान संतो द्वारा व्याख्यान आदि कार्यक्रम किये गये । आस-पास के २५ गाँव तथा देश-विदेश से अनेक भक्तों ने लाभ लिया । इन कार्यक्रम में अहमदाबाद के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी स.गु. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर), शा. स्वा. रामकृष्णदासजी, स्वामी जयप्रकाशदासजी आदि संत-मंडल के साथ पधारे थे । वडताल, मूली, भुज, जुनागढ तथा गढपुर से संतगण पधारे थे । महोत्सव के तीसरे दिन प.पू. बड़े महाराजश्रीने प्रतिष्ठा यज्ञ का आरंभ करवाया चौथे दिवस प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालश्रीने पधारकर बहनों को दर्शन का सुख दिया । अंतिम दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे तथा वेद के मंत्रो के द्वारा ठाकुरजी तथा श्री गणपतिजी - हनुमानजी की प्रतिष्ठा करके मंदिर के दर्शन किये । उसकेबाद सभा में पधारे थे । सभा में कथा की पूर्णाहुति करके सेवा करनेवाले यजमानो का सन्मान करके आशीर्वाद दिये । महोत्सव में ठाकुरजी की नगरयात्रा का अद्‌भुत आयोजन किया गया । जिस में १०००० जितने भक्तों ने भाग लिया । समग्र महोत्सव में नूतन मंदिर में जिम्मेदार सेवा करनेवालें भक्तों एवम् श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा से समग्र उत्सव की शोभा में वृद्धि हुई । जिसमें विजापुर, सांकापुरा, भागपुरा, गवाडा, वजापुर, रणछोडपुरा, हाथीपुरा, जेपुर, थांक, देबवाडा, माणेकपुर, कुकरवाडा, माणसा, विहार, पिलवाई, बदबुरा, ईश्वरपुरा, बालवा, सोजा, मोखासण, कच्छ तथा अहमदाबाद के हरिभक्तों की उच्च सेवा तथा सहकार प्राप्त हुई । संतो में शा. कुंजविहारीदासजी, शा. गोपालचरणदासजी, तथा सा. दिव्यप्रकाशदासजी आदि संतने सेवा में सहकार दिया । इस महोत्सव की यादे सभी के हृदय में रहेगी । और सभी मोक्ष के अधिकारी बनेंगे ।

(शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, गांधीनगर)

बालासिनोर बहेनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर मूर्ति प्रतिष्ठा (बहनों का) ता. २२-२-१५ के दिन विधिपूर्वक मनाया गया । यहाँ स.गु. महानुभावानंद स्वामीने सत्संग करवाया था । यहाँ बहनो के मंदिर अति जीर्ण होने पर नूतन मंदिर निर्माण हेतु बहनों के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद सह प्रेरणा से हरिभक्तों के साथ से एक ही वर्ष में सुंदर मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया । मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष में त्रिदिनात्मक कथा महानुभावानंद स्वामी रचित ''श्री हरिकृष्ण लीलामृत सागर'' ग्रंथ की कथा शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई । एवम् विष्णुयाग, नगर यात्रा, महापूजा, शोभायात्रा आदि कार्यक्रम धूमधाम से मनाये गये । ता. २२-२-१५ को प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारे थी । ठाकुरजी की षोडशोपचार वैदिक मंत्रोचार के साथ मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी । इस प्रसंग पर सिंहासन में विराजमान श्री घनश्याम महाराज के मस्तक पर

प.पू. आचार्य महाराजश्रीके द्वारा मुगट रखा गया ।

उसके बाद सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन यजमान परिवारोने किया । मंदिर निर्माण में सेवा करनेवाले दाताओं का भी सन्मान किया गया । जेतलपुर, धोलका, मकनसर, कांकरिया, मूली, सायला, ईडर, अंजली, मेहसाणा, जयपुर, हिंमतनगर, सिद्धपुर, वाली तथा छपैया से संतगण पधारे थे । और अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया ।

समग्र मंदिर के निर्माण कार्य पू. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से सम्पन्न हुआ । प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद स्वरुप हार पहनाया । ट्रस्टीओं का भी सन्मान किया गया । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए नियम, निश्चय तथा पक्ष रखने की सलाह दी । स्वयं सेवको तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । समग्र प्रसंग में जेतलपुर के संतमंडल की सेवा उत्तम थी ।

(कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भावपुरा का ८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से, जेतलपुर के पू. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर भावपुरा का ८ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । ता. ५-२-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का गाँव में धूमधाम से स्वागत किया गया । उसके बाद मंदिर में ठाकुरजी की पूजा करके अभिषेक-आरती की ।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवारने पूजन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये । जेतलपुर, अजली, नारणपुरा तथा मूली के संतोने प्रेरकवाणी में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति पूजा करने की आज्ञा दी । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये । प्रसंग में स्वयंसेवक तथा कोठारी स्वामीने सेवा की । (कोठारी दिनेशभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा का २१ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजीकी प्रेरणा से महिला मंडल की समस्त बहनोकी तरफ से २१ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचदिनात्मक कथा शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदाजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री कथा श्रवण करने हेतु रोज पधारती थी । ता. २९-१-१५ को प्रातः ६-३० बजे मंगला आरती के बाद भूदेवों द्वारा यजमान महिला मंडल ने ठाकुरजी का भावपूर्ण पूजन किया । प्रातः ६-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्रीके शुभ वरद् हाथों से श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार अभिषेक किया गया । हजारो भक्तोंने प्रसंग का लाभ लिया । उसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने यजमान (भाईओं का) हार पहनाकर सन्मान किया ।

सुबह १० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उनके वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति की गयी । उसके बाद यजमान हरिभक्तों तथा अग्रगण्य हरिभक्तों तथा शा. माधव स्वामी आदि ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किये । प.पू. महाराजश्रीके वरद् हाथों से मंदिर की वेबसाईट खोली गयी । उसके बाद ठाकुरजी की आरती कि थी । अन्नकूट का प्रसाद तथा अभिषेक का दूधगरीबों में वितरित किया गया । सभा संचालन पूजारी श्रीजीचरण स्वामी तथा रसोई की सेवा मुकुंद स्वामी (मूली)ने की । समग्र पार्षदो में भूदेवो, महिला मंडल तथा युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । (मयुर भगत)

जेतलपुर में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १८९ वाँ पाटोत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायम भगवान के हाथों से स्थापित महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १८९ वे पाटोत्सव के उपलक्ष में श्री हरिलीलासिंधु ग्रंथ की पंचदिनात्मक कथा का ता. ९-३-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रारंभ किया गया ।(यह ग्रंथ ब्र.स्वा. वैष्णवानंद स्वामीने व्रजभाषा में लिखा है । उसके बाद उस ग्रंथ की कथा आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज ने (माणसा के राजा आनंदसिंह को सुनाई थी । इस कारण यह ग्रंथ अप्राप्य था । जेतपुर मंदिर द्वार उस गद्य में ट्रान्सलेशन शा. स्वा. उत्तमप्रियादसजीने किया । इस ग्रंथ की कथा का आयोजन शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी के (जेतलपुर) वक्ता पद पर हुआ । पाटोत्सव के यजमान पद का लाभ प.भ. श्री जनकभाई विनुभाई पटेल के परिवार (हरिपुरावाले) ने लिया । कथा प्रसंग में रोज प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारती थी । और बहनो का दर्शन आशीर्वाद का लाभ दिया । कथा अंतर्गत विविधउत्सव तथा

महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया । जिसकी पूर्णाहुति ता. १४-३-१५ को प.पू. बड़े महाराजश्रीने के वरद् हाथों से हुई प.पू.बड़े महाराजश्रीके वरद् हाथों से वेदविधिपूर्वक सम्पन्न हुई । सिंगार-अन्नकूट आरती उतारकर सभा में बिराजमान हुए । यजमान परिवार ने पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये ।

गंगामां के प्रसादी के चमत्कारी श्री राधाकृष्णदेव का अभिषेक महिला मंदिर में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीके वरद् हाथों से प्रथमबार सम्पन्न हुआ ।

अद्भुत अन्नकूट दर्शन आरती पू. श्रीराजा के वरद् हाथों से हुई ।

सभा में स.गु. आनंदानंद स्वामी की प्रसादी की तुंबड़ी जिस में श्रीहरिने अहमदाबाद मंदिर बनावाने के लिए रु. ११ दक्षिणा दी । इसी कारण मंदिर निर्माण हुआ । वही प्रसादी की तुंबडी का दर्शन सभा में करवाया गया । उसका पूजन-आरती की गई थी । संतो हरिभक्तों ने पधारकर दर्शन करके प्रसाद ग्रहण किया । जेतलपुर, कांकरिया, अंजली मंदिर के स्वयंसेवकोंने सुंदर सेवा की । (महंत के.पी. स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा ९ वाँ पाटोत्सव

श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराजश्री के प्रसादी के काशीन्द्रा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से भाईओं - बहनों के मंदिर में क्रमशः १२५ वाँ तथा ९वाँ पाटोत्सव ता. १५-३-१५ को मनाया गया । षोडशोपचार महापूजा, ठाकुरजी का पूजन अभिषेक इत्यादि किया गया । संतो द्वारा कथावार्ता हुई । उसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । यजमानश्री अ.नि. प.भ. दिनेशभाई ईश्वरभाई पटेल (ह. गं.स्व. भारतीबहन दिनेशभाई पटेल) परिवारके जमाईश्री ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन आरती की । समस्त सभा को आशीर्वाद दिये । समग्र आयोजन जेतलपुर के मंदिर द्वारा किया गया । (पटेल अशोकभाई खोडाभाई)

नारायणघाट मंदिर में स्नेह मिलन समारोह

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहां के महंत स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा महंत स.गु. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा मार्गदर्शन से यहाँ आत्मीयता से भरपूर संतो-भक्तों का अद्भुत स्नेह समारोह ता. १०-१-१५ को विधिपूर्वक किया गया । श्रीहरि का तथा धर्मकुल का अलौकिक सत्संग ही हमारा परिवार । संतो में कालुपुर मंदिर के महंत पू. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने स्नेह पूर्ण शब्दों में आशीर्वाद दिये । शाकोत्सव में बाजरे की रोटी तथा शब्जी का प्रसाद सभीने ग्रहण किया ।

(शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा गुरु प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर का ८ वाँ पाटोत्सव ता. १०-२-१५ को धूमधाम से मनाया गया । पाटोत्सव के यजमान प.भ. कुबेरभाई परिवार था ।

प्रासंगिक सभा में पू. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, महंत शा. छोटे पी.पी. स्वामी (गांदीनगर), शा. चैतन्यस्वरुपदासजी आदि संतोने कथा-वार्ता का लाभ दिया । प.पू. बड़े महाराजश्री का शुभागमन होते ही ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की गयी । सभा में यजमान परिवारने गुरु पूजन करके आरती की गयी । अंत में समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, विहार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा रजत जयंती महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर महंतश्री) के मार्गदर्शन प्रेरणा से ता. १६-२-१५ से ता. १८-२-१५ तक मोटेरा मंदिर का रजत जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिनात्मक कथा शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष में अंत में १८ महीने से भिन्न-भिन्न कार्यक्रम हो रहे है ।

समग्र महोत्सव में यजमान प.भ. अंबालाल पुरुषोत्तमदास पटेल तथा प.भ. लाभलालभाई पुरुषोत्तमदास पटेल का परिवार था । तीन दिनो तक गाँव वालो को खिलाया गया था । पूर्णाहुति पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । तथा मंदिर में ठाकुरजी की आरती, अन्नकूट आरती करके भी को आशीर्वाद दिये । संतो में पू.

महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी आदि संतमंडल गण पधारे थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी ।

उत्सव के उपलक्ष में ता. १८-१-१५ को १२ धंटे की अकंड धून की गयी । सुबह ९ से १२ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल द्वारा तथा दोपहर में १२ से ६ युवक मंडलने धून की समापन में शा. पी.पी .स्वामीने संत मंडल के साथ पधारकर आशीर्वाद दिये । (शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाड़ा ३३ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर गवाडा का ३३ वाँ पाटोत्सव ता. २६-१-१५ को धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर रात्री में शा. कुंजविहारीदास, तथा दूसरे दिन शा. दिव्यप्रकाश स्वामीने कथा वार्ता की । अन्नकूटआरती स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा शी. पी.पी स्वामी (गां. से-२) ने की । (विनुभाई कोठारी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली ८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से जेतलपुर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से मंदिर का ८ वाँ पाटोत्सव ता. २-२-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक विधिपूर्वक किया । ता. १-२-१५ को ठाकुरजी के वस्त्रो की भेट धूमधाम से यजमानो द्वारा मंदिर में अर्पण कि गया । पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. रमणभाई जोईताराम पटेल परिवार वासणा तथा भिन्न प्रसंग के यजमानो का श्रीहरि का स्वरुप भेट देकर सेवा का सन्मान किया गया । प्रासंगिक सभा में जेतलपुर, अहमदाबाद, नारणपुरा, कांकरीया, एप्रोच, धोलका, छपैया, मूली, सायला, ईडरा, हिंमतनगर, जयपुर तथा वाली से पधारे संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया । अंत में ठाकुरजीकी अन्नकूट आरती उतारकर प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद दिये । समग्र आयोजन यहाँ के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी ने किया । समग्र सेवा में कांकरिया युवक मंडल तथा महिला मंडल (अंजली)ने सुंदर सेवा की ।

(महंत शा. विश्वप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा रात्रि पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा गांधीगनर महंत शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से प्रसादीभूत मोटेरा में ता. ३१-१-१४ से ता. ४-१-१५ तक श्रीमद् भागवत अंतर्गत एकादश स्कंधरात्री कथा श्री स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर हुई । जिस के यजमान अ.नि. प.भ. मगनभाई गोपालभाई पटेल का परिवार था । प.पू. बड़े महाराजश्रीने यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये । इस प्रसंग पर संतो में महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी देव स्वामी उपस्थित थे । सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, मोटेरा)

सोजा गाँव में पंचदिनात्मक पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री, गांधीनगर) तथा स्वामी हरिचरणदासजी कलोल की प्रेरणा से ता. १४-१-१५ से ता. १८-१-१५ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर सोजा का १०६ वाँ पाटोत्सव मनाया गया । प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य पंचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा. रामकृष्धासजी (कोटेश्वर)ने की । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे थे । जिस में स.गु. महंतच शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकादासजी आदि संतगण पधारे थे । समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । गांधीनगर मंदिर में महंत स्वामी के बोलाने पर एक भक्तने टावर बनवाने के लिये ८० लाख दे दिये । (कोठारीश्री सोजा)

कडी में सत्संगिजीवन पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से मानव सेवा समिति द्वारा ता. १-१-१५ से ता. ९-१-१५ तक शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)ने संगीत के मधुरताल पर श्रीमद् सत्संगिजीवन नवान्ह पारायण का श्रवण करवाया । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके साथ पू. महंत स्वामी, नारायणघाट के महंत स्वामी आदि संत पधारे थे। समग्र प्रसंग के प्रेरक शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर महंतश्री) थे । हजारो भक्तजनों ने कथा श्रवण किया ।

(लालभाई प्रमुखश्री जगदीशभाई)

भीमपुरा गांव में पारायण आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा गांधीगनर महंत शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से गाँव के सभी भक्तो की सेवा सहकार से भीमपुरा गाँव में ता. ७-१-१५ से ता. ११-१-१५ तक श्रीमद् भागवत के अंतर्गत एकादश स्कंधपारायण स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णादासजी (कोटेश्वर)ने वक्तापद पर सम्पन्न हुई । गाँव के तथा आस-पास के कई भक्तोंने कथा श्रवण करके धन्यता अनुभव की ।

पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा साथ में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा देव स्वामी (महंतश्री, नारायणघाट) पधारे थे । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये ।

(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (नूतन मंदिर) प्रतापपुरा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. सिध्धेश्वरदासजी तथा शा.स्वा. माधवप्रियदासजी (माणसा महंतश्री) की प्रेरणा से ता. ७-२-१५ से ता. ११-२-१५ तक प्रतापपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) तथा शा.स्वा. माधवप्रियदाजीने कथामृतपान करवाया । प्रथम दिवस अमदावाद मंदिर के महंत स्वामीने प्रासंगिक उद्बोधन किया ।

ता. १०-२-१५ को प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी । ता. ११-२-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उनके वरद् हाथों से ठाकुरजी की मूर्त प्रतिष्ठा की गयी ।

ता. १५-२-१५ को ५०० हरिभक्तोंने प्रतापपुरा से माणसा पदयात्रा करके ठाकुरजी के दर्शन किये थे ।

(शा. माधव स्वामी, माणसा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) पुनःमूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. वासुदेवचरणदासजी की प्रेरणा से डांगरवा (वांटो) श्री स्वामिनारायण मंदिर का पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. १०-२-१५ से ता. १२-२-१५ तक मनाया गया । इस प्रसंग पर श्री भक्तचिंतामणी ग्रंथ की त्रिदिनात्कम रात्रीय कथा शा. माधवप्रियादसजी के वक्तापद पर सन्मान हुई । श्रीहरियाग का भी आयोजन किया गया ।

सभा संचालन शा. कूंजविहारीदासने किया था । ता. १२-२-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से की गयी । इस प्रसंग पर पोथीयात्रा, जलयात्रा, ठाकुरजी की नगर यात्रा धूमधाम से निकाली गयी।

(शा. माधव स्वामी)

बालवा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा द्विशाब्दी ज्ञान यज्ञ

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं जेतलपुरधाम के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बालवा द्वारा दशाब्दी ज्ञानयज्ञ का ता. ३-१-१५ से ९-१-१५ तक आयोजन किया गया था । जिस के वक्ता पद पर शा. स्वा. चन्द्रप्रकाशदासजी तथा संहितापाठ में शा.स्वा. उत्तमप्रियदासजी विराजमान थे । अनेक धामों से पधारे हुये संतो की अमृतवाणी का लाभ मिला था ।

बहनो को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । अन्तिम दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। कथा की पूर्णाहुति किये थे । यजमान अ.नि. श्रीमती रईबा वेलाभाई परिवार, भोलाभाई वेलाभाई चौधरी भरतभाई चौधरी, अशोकभाई चौधरी, महेशभाई चौधरी ईत्यादि परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था । इसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्री विदेश की यात्रा करके यजमान के घर पधारे थे और यजमान को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

(श्री नरनारायण युवक मंडल - बालवा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के महंत स.गु. स्वा. श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से महा शुक्ल पक्ष-५ वसंत पंचमी के उत्सव के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी तथा शा.स्वा.

अभयप्रकाशदासजीने किया । जिस के यजमान सां. राजकुंवरबाई तथा उषाबाई (मोरबी) तथा पाटोत्सव के यजमान प.भ. जयेशभाई घनश्यामभाई गढवी का परिवार था ।

इस प्रसंग में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री दर्शन-आशीर्वाद देने पधारे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक विधिपूर्वक किया गया । श्रीहरियाग की पूर्णाहुति के बाद अन्नकूट की आरती की गयी । जिस के यजमान अ.नि. नारायणजीवन स्वामी के स्मरण हेतु स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी का मंडल था ।

मंदिर के प्रसादी के विशाल आंगन में संतोने अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने रंगोत्सव खेल कर आश्रितों को अलौकिक सुख दिया । रंगोत्सव के यजमान क्रिष्णाबहन नविनभाई मांडलिया (मोरबी) थे । सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झाला तथा भरत भगत ने किया ।

रसोई की तमाम व्यवस्था कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से व्रज स्वामी कोठारी, ज्ञान स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, नारायणप्रिय स्वामी तथा प्रविण भगत ने की । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४३ वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में मूली में हुई विविधसत्संग प्रवृत्तियां

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आगामी ४३ वाँ जन्मोत्सव २३-१०-१५ विजया दशमी को मूली देश के चराडवा गाँव में मनाया जायेगा । जिस के उपलक्ष्य में प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चराडवा मंदिर के महंत स्वामी तथा संत मंडल द्वारा मूली देश के अनेक गाँव में सत्संग की प्रवृत्ति, समूह महापूजा, ९ से ४ अखंड धुन तथा स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर ४ से ६ तक रात्रि में ८ से १० बजे तक कथा, संतो द्वारा दंडवत् प्रदक्षिणा, मंत्रलेखन, शास्त्रवांचन, जनमंगलपाठ इत्यादि के लिये नियम दिया गया था । यह नियम भाइयो तथा बहनो के मंदिर में दिया गया था ।

जिस में चराडवा, भक्तिनगर, नरनारायणनगर, रणजीतगढ, नीलकंठनगर, घनश्यामनगर, धूलकोट, लीलापुर, हलवद, मयूरनगर, स्वा. नगर, श्रीजीनगर, जामसर, जीरागढ, रामपरा, टींबा, खाखा, मेमका इत्यादि गाँवो में संतोने श्रीहरि का तथा धर्मकुल का महत्व समझाया था ।

सभी गांवो में चारडवा के महंत स्वामी निर्गुणदासजी, शा. स्वा. सत्यप्रकाशदासजी, शा. ब्रह्मविहारी स्वामी, शा. राधारमण स्वामी इत्यादि संत मंडल द्वारा उत्तम सत्संग प्रवृत्ति हो रही है । (श्री नरनारायणदेव युक मंडल - चराडवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा का १३० वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्मदेव हरिकृष्ण महाराज बाल स्वरुप घनश्याम महाराज इत्यादि देवों का १३० वाँ पाटोत्सव फाल्गुन शुक्ल-२ ता. २०-२-१५ को विधिपूर्वक संपन्न किया गया था । महंत स्वामी उत्तमप्रियदासजी तथा शा. ब्रह्मविहारीदासजी की प्रेरणा से श्री करशनभाई देवशीभाई जादव परिवारने यजमान पद का लाभ लिया था । संतो द्वारा ठाकुरजी का महाभिषेक, अन्नकूट तथा श्रृंगार आरती की गई थी । बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । घनश्यामनगर तथा मयुरनगर के बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था । संप्रदाय में विद्वान संत शा. स्वा. निर्गुणदासजी द्वारा कथा की गई थी । संतो में मूली के महंत स्वामी, लींबडी के महंत स्वामी, विष्णु स्वामी, राम स्वामी, प्रभु स्वामी, सूर्यप्रकाश स्वामी, श्रीजीस्वरुप स्वामी, बालू स्वामी, भक्तिहरि स्वामी, जयप्रकाश स्वामी इत्यादि संतोने अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया था । समग्र प्रसंग में ब्रह्म स्वामी तथा राधारमण स्वामी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर सेवा की थी ।

(शा. सत्यप्रकाशदासजी - चराडवा)

स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के जन्म स्थान श्री स्वामिनारायण मंदिर खाण में २९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से ध्रांगध्रा के बहनो के मंदिर की अ.नि. सां. सीताबा, अ.नि. सां. गौरीबा के दिव्य संकल्प से सां. कंचनबा के मंडल द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर खाण में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का २९ वाँ पाटोत्सव फा.शु.०७ को मनाया गया था । ता. २२-२-१५ से ता. २५-२-१५ तक श्रीमद्

सत्संगिभूषण की त्रिदिनात्मक कथा शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुई थी । समग्र आयोजन महंत स्वा. ओमप्रकाशदासजी, स.गु. स्वा. लक्ष्मीप्रसाददासजी, जे.पी. स्वामी, विष्णु स्वामी, अनु स्वामी, चंदु भगत, भरत भगत इत्यादि संत-पार्षद मंडल के सहयोग से संपन्न हुआ था। (धर्मेश भगत - अनिलभाई)

रणजीतगढ में भूमिपूजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ७-२-१५ को श्रीहरिकृष्णधाम के भूमि पूजन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों विधिपूर्वक संपन्न हुआ था।

स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी तथा संत मंडल ने उपरोक्त हरिकृष्णधाम को प.पू. आचार्य महाराजश्री के चरणों में भेंट कर दिया।

प्रासंगिक सभा में मूली के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, स्वा. नारायणप्रसाददासजी इत्यादि संतोने प्रसादी के स्थलो का महत्व समझाया था। अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

(अनिल दूधरेजिया)

मेमका से सुरेन्द्रनगर मंदिर तक पदयात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से सुरेन्द्रनगर मंदिर का दशाब्दी महोत्सव से सम्बन्धित कार्यक्रमो के लिये मेमका गाँव के हरिभक्तों के साथ कार्यक्रम करते स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, नित्यप्रकादासजी इत्यादि संत मंडल मेमका से सुरेन्द्रनगर मंदिर तक महाधुन के साथ पदयात्रा माधशुक्ल-१५ को आयोजित की गयी थी। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से अधोनिर्दिष्ट उत्सव मनाया गया। शिक्षापत्री जयंती, वसंत पंचमी, महाशिवरात्री, आदि उत्सव को धूमधाम से मनाया गया । पुजारी स्वामी ने ठाकुरजी का अलौकिक दर्शन करवाया । शा.स्वा. विश्वविहारीदासजीने शिक्षापत्री का १ से २१२ श्लोकों का पठन करवाया । शिवरात्री को श्री दिनेशभाई जोशीने शिवपूजन करवाया था।

गुजराती कलास में विना मूल्य के प्रत्येक शनिवार को गुजराती भाषा का ज्ञान दिया जाता है। जिसका संचालन श्री संजयभाई आर. पटेल कलास के विद्यार्थियों को महंत स्वामी तथा पू. स्वामी के हाथों गुजराती भाषा के एविचमेन्ट का सर्टिफिकेट दिया गया । बालिकाओं को श्री जगदीशभाई तथा हेतलबहनने सन्मानित किया था । स्वामीने गुजराती भाषा के प्रभुत्व-संस्कार की बातें कही। (वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लूईविल कंटकी (मूलीधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली के कंटकी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, शा.स्वा. हरिनंदनदासजी की उपस्थिति में यहाँ के हरिभक्तों ने मिलकर शिक्षापत्री जयंती के अवसर पर शिक्षापत्री का पाठ करवाया था । आस-पास के विस्तार से अनेक भक्तोंने दर्शन का लाभ लिया। सभा में शिक्षापत्री का पूजन विधिपूर्वक किया गया। संतोने कथा में शिक्षापत्री का माहात्म्य कहा । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर देश कोलोनीया में महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा-आशीष सह आज्ञा से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में महंत शा. ब्रह्मस्वरुपदासजी की उपस्थिति में महापूजा का सुंदर आयोजन किया गया । पिनाकीनभाईने शास्त्रोक्त विधिकरवाई। विशाल संख्या में हरिभक्तोंने दर्शन का लाभ लिया। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरोन्टो केनेडा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से टोरोन्टो केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रत्येक उत्सवों को धूमधाम से मनाया गया।

सभा संचालन श्री दशरथभाई चौधरी तथा श्री रसिकभाई पटेलने किया । हरिभक्तोने शाकोत्सव को धूमधामसे मनाया । श्री आशिषभाई शास्त्रीने सुंदर कथा माहात्म्य का वर्णन किया। समस्त हरिभक्तोंने तन-मन-धन से सेवा की। (भाईलालभाई पटेल)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

ट्रेन्ट (ता. विरमगाँव) : परमकृपालु श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल की निष्ठावाली श्री स्वामिनारायण भगवान के नामकी सतत जप करनेवाली गं.स्व. रुक्ष्मीणीबा मणीलालभाई पटेल (३ वर्ष ९२) ता. १३-२-१५ को सर्वोपरी श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है, ट्रेन्ट की बहनों के सत्संग में उनके जानेकी कमी बनी रहेगी ।

प्रांतीज : यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर के को. हरिभाई के पिताजी की केशवलाल शिवलाल मोदी ता. २७-१२-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अंबापुर-जि. गांधीनगर : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावाले श्री छोटाभाई रणछोडभाई पटेल ता. २-१-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अमदावाद-चांदखेडा : कलाबहन साकलचंद ता. १-१-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

सादरा-वासणा : श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठारी श्री महेशभाई दलसुखराम दरजी (उ. ५७ वर्ष) ता. २७-१-१५को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

डेडीयासण : श्री भगवानभाई के पुत्र श्री दिलीपभाई ता. २५-१-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

वावोल : प.भ. विठ्ठलभाई मरधाभाई पटेल (उ. ८२ वर्ष) ता. ३-३-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

मयुरनगर-हलवद : श्री दलवाडी जशुभाई घनश्यामभाई (उ. ३५ वर्ष) ता. २३-२-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

माधवगढ-प्रांतीज : श्रीमती चंचलबहन रसिकभाई पटेल ता. २७-२-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

माणसा : श्री बलदेवभाई त्रिभोवनदास पटेल की माताजी मोतीबा ता. १९-२-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

मोरवासण : श्री रामभाई मोहनदास पटेल की धर्मपत्नी अ.सौ. कमलाबहन ता. २-२-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

अमदावाद : श्रीमती कमलाबहन कानजीभाई (स्वदास) तथा श्री विनोदभाई की माताजी ता. ८-२-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

नांदोल : पटेल भरतभाई भलाभाई ता. २५-११-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

घनश्यामनगर-हलवद : श्री महादेवभाई विरजीभाई (उ. १०१ वर्ष) श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

दोलाराणा-वासणा : श्री रमणलाल माणेकलाल भावसार ता. १५-१-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

लाठीदल : श्री राठोड रामबहन मथुरभाई (पार्षद बाबुभगत की माताजी) ता. २९-१-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

लींबोदरा : चौधरी रमेशभाई रामजीभाई ता. ६-२-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

कलोल-कोढा : श्री करशनभाई जोईताराम पटेल की धर्मपत्नी शांता-बहन ता. १९-१-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

दहेगाँव : श्रीमती कमलाबहन कांतीभाई ता. ३१-१-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

अमदावाद : श्री केशवलाल बापूदास (ईटादरावाला) ता. ३-२-१५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अमदावाद : श्री रमेशभाई (डोरावाले) के दामादश्री विपुलकुमार एस. सपारेलीया श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

७
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - ઉવારસદ આપનુ

(१) छपैयाधाम में श्रीहरिप्रागट्योत्सव ।(२) धरियावद में दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर विजयस्तंभ यात्रा ।(३) कांकरिया मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये तथा ब्रह्मभोज प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(४) डिट्रोईट मंदिर में महाशिवरात्री दर्शन ।(५) कोठंबा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(६) घनवाडा (धोलका देश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(८) पाटण मंदिर में सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री ।(९) अंजली मंदिर में सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री ।

Registered under RNI NO-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd. PSO on 11 the every month under postal REG. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd. valid up to 31-12-2017

(१) अमदावाद श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के यजमान प.भ. श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल (स्कीम कमेटी सदस्य) परिवार प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए तथा प.पू. महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में यजमान परिवार । (२) रामनवमी - श्रीहरि जयंती के प्रसंग पर प्रागट्योत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा मंदिर के चौक में संत-हरिभक्त रास करते हुए । (३) अमदावाद मंदिर में पारायण प्रसंग के यजमान प.भ. हरजी वेलजी गामी, गाँव केरा-कच्छ (वर्तमान में लंडन) परिवार प.पू. महाराजश्री के साथ व्यासपीठ की आरती उतारते हुए ।

Jagadish Offset

Praful Kharsani